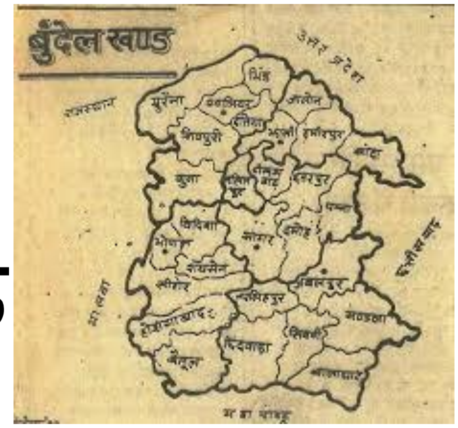
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





सन्भ्रान्तो का भ्रमण
Elite Visit

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्भ्रान्तो का भ्रमण Elite Visit

अध्याय शीर्षक	सन्भ्रान्तो का भ्रमण
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	978-93-5906-820-6
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Elite Visit**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

सन्भ्रान्तो का भ्रमण Elite Visit

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – सम्भ्रान्तो के भ्रमण का संक्षिप्त वर्णन

सम्भ्रान्तो का भ्रमण Elite Visit

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सम्भ्रान्तो का विवरण

1 सुभाष चन्द्र बोस
2 चन्द्रशेखर त्रिपाठी आजाद 1927
3 मोहनदास कर्मचन्द गान्धी
4 लाला लाजपत राय
5 पद्माकर
6 मस्तानी बाई
7 मिर्ज़ा ग़ालिब(1797–1869ई0)
8 माल्कम हेली, गर्वनर, उत्तर प्रदेश
10 नॉर्वेजियन–इंग्लिश कब्रिस्तान

सुभाष चन्द्र बोस

स्वतन्त्रता सन्ग्राम के दौरान 1941 में यहां बान्दा में आंदोलन का बिगुल फूंका गया जिला कांग्रेस कार्यालय में आज भी सुभाष चन्द्र बोस की पुण्यतिथि का श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। सन 1941 में सुभाष चन्द्र बोस बान्दा आए थे और भारत की स्वतन्त्रता के लिए क्रांति का जोश भरकर गए थे। उसके बाद यहां क्रांति को लेकर आंदोलन तेज हो गए थे। इसके अलावा सुभाष चंद्र बोस के बारे में और कोई जानकारी उपलब्ध न हो सकी।

चन्द्रशेखर त्रिपाठी आजाद 1927

आजादी के आंदोलन में बान्दा के क्रांतिकारियों की भी अहम भूमिका रही है। वर्ष 1927 में ब्रिटिश हुकूमत के जुल्म से छुटकारा पाने के लिए पंडित गीपीनाथ द्विवेदी सहित लगभग 100 क्रांतिकारी ने बगावत की बिगुल फूंका थी। इस समय चन्द्रशेखर त्रिपाठी आजाद भी यहां पर आए थे और वेश बदल कर दो दिन तक ठहरे। इसके बाद आजाद प्रयागराज स्थित अल्फ्रेड पार्क में रुके वहां किसी व्यक्ति विशेष की मुखबिरी के कारण, अंग्रेजों से से लोहा लेते हुए शहीद हुए। बान्दा में सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद व गान्धी तक आए थे। चन्द्रशेखर आजाद ओरछा झांसी के निकट स्तर नदी के किनारे हरिशंकर वाजपेई के छद्म नाम से गोपनीय ढंग से ठहरे हुए थे। बान्दा के पंडित गोपीनाथ दनादन, हल्का लोहार, जुगल किशोर आदि वहां गए और कई दिन रुक कर प्रशिक्षण लिया गोपीनाथ के अनुरोध पर चन्द्रशेखर आजाद बान्दा आए और गोपीनाथ के यहां दो दिन रुके, लोगों के कथनानुसार आजादी के लिए क्रांतिकारियों के साथ मंत्रणा की तथा दो दिन बाद उन्हें नारी के वेश में निकल गये।

मोहनदास कर्मचन्द गान्धी

1929 में लाहोर में रावी नदी के तट पर कांग्रेस का महा अधिवेशन संपन्न हुआ जहां पर पंडित जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष? मनोनीत किया गया। इस सम्मेलन में बान्दा से पंडित गोपीनाथ द्विवेदी दनादन भी शामिल हुए थे और इस समय 1929 में मोहनदास कर्मचन्द गान्धी बान्दा आए थे और बान्दा की प्रभात फेरी में शामिल हुए थे। शहर में स्थित कोतवाली की छत पर चढ़कर चरखा वाला तिरंगा झंडा भी फहराया था इसके पश्चात मोहनदास कर्मचन्द गान्धी हमीरपुर के लिए प्रस्थान कर गये।

लाला लाजपत राय

दयानंद वैदिक अनाथालय का उद्घाटन लाला लाजपत राय ने वर्ष 1908ईस्वी में बान्दा में किया था।

सम्भ्रान्तो का भ्रमण Elite Visit

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बान्दा जनपद में 12 जुलाई 1966 इतिहास में काला दिन के रूप में दर्ज है। यह घटना कचहरी के पास ऐतिहासिक अशोक लाट के पास हुई थी। 12 जुलाई को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मजदूर सन्गठन में शहादत देने वाले मजदूरों और किसानों को आज भी याद किया जाता है। दिन के लगभग 1100 बजे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के आवाहन पर किसान हाथों में लाल झंडे लिए सड़क पर उतर आए और जुलूस कलेक्ट्रेट के पास जा पहुंचे। मना करने के बावजूद पुलिस के सामने आए और आक्रोश भयानक हाथापाई के रूप में बदल गया और बाद में पुलिस के डंडे शुरू हुए उसे वक्त करीब 112 किसान शहीद होने की खबर थी घटना में 213 लोग घायल हुए थे, 19 लोगों की मौके पर मौत हुई। बाकी गोलियों से घायल प्रदर्शनकारियों को ट्रकों में भरवा कर जिंदा ही जिला स्थित यमुना नदी में फेंकवा दिया गया था ऐसा लोगों का कथन है जो कि स्वतन्त्र भारत में संभव नहीं होगा। इस घटना में दर्ज 554 लोगों के खिलाफ सरकारी खजाना लूटने का आरोप लगा और उन्हें जेल में भेज दिया गया।

<u>पद्‌माकर</u>

बान्दा में एक जगह का नाम है पद्‌माकर चौराहा। जहां पर कवि पद्‌माकर की मूर्ति भी लगी हुई है। उसी के पास एक जीर्ण शीर्ण मकान भी बना हुआ है जिसे पद्‌माकर का घर भी कहा जाता है। पद्‌माकर का जन्म सम्वत् 1810 में सागर में हुआ था।

पद्‌माकर के पूर्व पुरुष मधुकर भट्ट मूंगी पट्टन मधुपुरी रंग पट्टन और कालेश्वरादि स्थानों से 750 दक्षिणात्य लोगों को साथ लेकर संवत 1615 में नर्मदा तीर्थस्थ गढ़ा पट्टन राज्य में दुर्गावती रानी के समय में आए और सभी तरफ फैलते हैं। पद्‌माकर का असली नाम प्यारेलाल था और पद्‌माकर उनका उपनाम था। यह भट्ट उपाधिकारी तैलंग ब्राह्मण सागर निवासी मोहनलाल के पुत्र थे। इनका जन्म 1810 विक्रम में सागर नामक जगह में हुआ, इसी से इन्होंने अपना उपनाम पद्‌माकर रखा। सागर और पद्‌माकर शब्द एकार्थ वाचक है। यह बात पद्‌माकर की विलक्षण जन्मभूमि भक्ति का परिचायक है

कहते हैं 16 वर्ष की अवस्था में ही पद्‌माकर कुछ कविता करने लगे थे और पहली कविता जो उन्होंने रघुनाथ राव को सुनाया था वह यह है

कवित्त

संपत्ति सुमेर की कुबेर की जो पावै ताहि,
तुरंत लुटावत विलंब उर धारै ना।
कहे पद्‌माकर सुहेम हय हस्तिन के,
हलके हजारन को बितर बिचारे ना।।
गजगंज बकस महीप रघुनाथ राव,
याहि गज धोखे कहूं काहू देय डारै ना।
याही डर गिरिजा गजानन को गोस रही,
गिरितें गरेतें नित गोद तें उतारैं ना।।

इसी कवित्त पर रघुनाथ राव बहुत प्रसन्न हुए और पद्‌माकर को एक लक्ष्य मुद्रा और साथ में समान सहित एक हाथी और एक घोड़ा उन्हें पुरस्कार में दिया। कहते हैं पर पद्‌माकर घोड़े की सवारी और युद्ध विद्या में भी निपुण थे।

यह दरबारी कवि थे और निश्चित रूप से मराठों के बारे में हर चीज को बढ़ा–चढ़ा कर लिखा। बाला जी व गंगाधर की मृत्यु की बाद मराठों की सत्ता को बड़ी चोट पहुन्ची। रघुनाथ राव ने राज्य प्रबन्ध उत्तम करने का प्रयास किया। उस समय उनके दरबार में कवि पद्‌माकर रहते थे। यह सिन्धिया और हिम्मत बहादुर के दरबार में भी रहे। पद्‌माकर अर्जुन सिन्ह के गुरु थे और एक तलवार सिद्ध करके उन्होंने अर्जुन सिन्ह को दी थी। जब हिम्मत बहादुर ने उन्होंने अर्जुन सिन्ह को हरा दिया है तब पद्‌माकर ने <u>अर्जुन सिन्ह की कीर्ती नहीं गाई परन्तु ''हिम्मत बहादुर वीरदावली''</u> बनाई वैसे भी दरबार कवि जिसके दरबार में रहते थे उसके बड़ाई, हर चीज को बढ़ा–चढ़ा कर लिखना, उनके युद्ध

में उनके बारे में सदा अच्छा लिखना। अगर कहीं कोई हीनता भी हो, उसको किसी न किसी तरीके से छुपाना या उसको यह सिद्ध करना कि यही सही था। अब हिम्मत बहादुर जीत गए थे तो पद्माकर हिम्मत बहादुर की तरफ आ गए और हिम्मत बहादुर वीरदावाली लिखी। 80 साल की उम्र में इनका देहांत सम्वत् 1890 में हुआ।

रघुनाथ राव का देहांत 1859 में हुआ। पद्माकर कवि का बान्दा से केवल इतना ही सम्बन्ध है कि हिम्मत बहादुर को जब बान्दा की बागडोर मिली तो उन्होंने हिम्मत बहादुर के बारे में बहुत कुछ अच्छा लिखा शायद इस समय कुछ समय के लिए वह बान्दा में रहे।

<u>मस्तानी बाई</u>

मस्तानी बाई, एक राज नर्तकी की लड़की थी और राजनर्तिकी भी थी, जिसको बंगश ने पेशवा के मनोरंजन के लिए प्रस्तुत किया था। पेशवा का दिल उसे पर आ बैठा। हिंदू और मुस्लिम दोनों संप्रदाय अपने–अपने हिसाब से उसके बारे में अपनी राय जाहिर करते हैं अतः ऐसी पुस्तक जो अंग्रेजों के द्वारा लिखी गई हो, उस समय के गजेटियर या इसी तरह के अंग्रेजों के द्वारा लिखी गई किताबों से अगर उद्धृत किया जाए तो वह एक प्रामाणिक कहानी कथा हो सकती है।

मस्तानी बाई के बारे में अगर वास्तविक कहानी पढ़नी है तो अंग्रेजों के द्वारा लिखे गए साहित्य से पता किया जाए। क्योंकि मुसलमान उसको एक नेक रानी बताते थे जबकि अन्य लोग उसे राजा द्वारा वैश्या की लड़की बताया करते थे। लेकिन यह तो निश्चित था कि वह एक मुसलमान थी जो किसी भी हालत में रानी नहीं हो सकती थी। यह इसी से ही जग जाहिर होता है कि <u>मुसलमान अपने धर्म के कट्टर</u> होते हैं। बाप या मां कोई भी हो अगर इन दोनों में से कोई एक मुसलमान है तो उसकी औलादे मुसलमान ही होगी चाहे इसके लिए उन्हें कुछ भी करना पड़े। यही चीज मस्तानी के साथ भी थी, उसकी सारी औलादें मुसलमान ही पैदा हुई चाहे बात पेशवा की ही रही हो। पर यह निश्चित था कि मस्तानी को बंगस के राज दरबार में नाचता हुआ देखकर तथा बंगश के द्वारा उसकी सेवा में लगाई गई मुसलमानी वैश्या की लड़की को बाजीराव पेशवा को बहुत पसंद आई और जब बंगश ने उसे कुछ मांगने को कहा तो बाजीराव पेशवा में मस्तानी को मांगा जिसमें एक कड़वाहट पैदा हुई। लेकिन किसी तरह से मन मार कर बंगश के द्वारा मस्तानी बाजीराव को दे दी गई और बाजीराव वहां से प्रस्थान कर गए। बाजीराव के एक रानी थी और ब्राह्मण पेशवा की पत्नी काशीबाई हुआ करती थी, लेकिन चालाकी, सुंदरता और पुरुष को आकर्षित करने में विशेषज्ञ मस्तानी बाई के आगे किसी की न चल पाई। 1730 में मस्तानी का बाजीराव से शादी हुई और 27 अप्रैल 1740 में 10 साल के बाद बाजीराव पेशवा का देहांत हो गया।

देखा जाए तो मस्तानी, छत्रसाल की रखैलों में 13वीं पत्नी से जन्मी संतान, रखैल की लड़की होने की वजह से वह रखैल ही रही। बान्दा से कुछ दिन का ही साथ रहा था।

<u>मिर्ज़ा ग़ालिब(1797–1869ई0)</u>

मिर्जा असादुल्लाह बेग खान उर्फ मिर्ज़ा ग़ालिब का गरीबी में खस्ताहाल बान्दा आना– मिर्ज़ा ग़ालिब के बारे में यह निश्चित है कि वह 1827 ईस्वी में अपनी पेन्शन को ठीक कराने के लिए कोलकाता जा रहे थे तो कानपुर पहुंचकर सख्त बीमार हो गए, जिसकी वजह से इलाज के लिए लखनऊ चले गए। वहां 5 महीने तक उनका इलाज होता रहा लेकिन लखनऊ की आब–ओ– हवा उन्हें रास ना आई। इसी मुसीबत के साथ उनकी माली हालत ने कंगाली में आटा गीला कर दिया। आर्थिक परेशानी की वजह से उन्हें बान्दा याद आया जहां उनकी मुमानी(मामी) के लड़के नवाब जुल्फिकार अली बहादुर, नवाब बान्दा और उनके मामूजाद भाई अजबक खान मौजूद थे। ये मिर्जा की मदद कर सकते थे, इस मकसद से 27 जून 1827 को ऊंट गाड़ी पर लखनऊ से रवाना होकर फतेहपुर आये। फतेहपुर से रात को चलने वाली ऊंट गाड़ी में 2 जुलाई को बान्दा पहुंचे। उस समय ऊंट गाड़ी अड्डा वर्तमान जीजीआईसी (गवर्नमेन्ट गर्ल्स इंटर कॉलेज) (बान्दा नवाबों की कचहरी वर्तमान जीजीआईसी) बान्दा और डिग्गी तालाब के बीच के मैदान में था। कॉलेज का भवन उसे समय अंग्रेजी सरकार की कचहरी थी और मोहम्मद अली जज के पद पर आसीन थे। मिर्ज़ा ग़ालिब बगैर बिना सूचना के आ गए थे तो इस कारण उनके स्वागत के लिए कोई मौजूद नहीं था। मिर्जा ने गाड़ी से उतरकर जुल्फिकार अली बहादुर और अब उनके मामू के लड़के अजबक खान के बारे में मालूम किया। एक

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

अजनबी शख्स को देखकर किसी ने मिर्जा से पूछा आप कौन हैं? मालूम होने पर, मोहम्मद अली अपने चैंबर से निकलकर सबसे पहले गालिब के स्वागत को पहुंचे। मोहम्मद अली साहब, जो जज थे, खुद फारसी के अच्छे शायर थे, स्वागत के तौर पहुचे। उन्होंने अपनी कोठी, जो कचहरी से मिली हुई थी, ले गए। मोहम्मद अली एक अच्छे शायर थे गालिब पर इनका अच्छा असर था मोहम्मद अली साहब बिलग्राम के रहने वाले थे जो वर्तमान में बिल गांव हैं यहां जी कोठी में उनके निवास था।

जब मिर्जा साहब की थकान दूर हुई तो नवाब साहब बारादरी में लेकर गए, वैद्यों की देख–देख में उनका इलाज हुआ। नवाब जुल्फिकार अली बहादुर और उनके डॉक्टरों के द्वारा इलाज से स्वस्थ होने और आर्थिक सहायता से ग़ालिब कोलकाता चले गए। कोलकाता के मिशन में सफल होकर जब वापस दिल्ली जा रहे थे तो फिर बान्दा आए। अपने साथियों का शुक्रिया अदा करने और एक हफ्ता रहकर इस वादे से दिल्ली चले गए कि नवाब अली बहादुर की सानी की तख्तपोशी में जरूर बान्दा आएंगे। परंतु ये न हो सका। बिना आए, नवाब की प्रशंसा में अपनी गजल भेजी। नवाब की शान में लिखा था–

ग़ालिब खुदा करे कि सवारे समंद नाज
देखू अली बहादुर आली गुहर को मैं

ग़ालिब बान्दा में 6 महीने रुके थे और बीमार पड़ ही आए थे तो उन्होंने किसी जमीन्दार से ₹2000 कर्ज लिया था। जमीन्दार का नाम पता ही नहीं बताया गया। लगभग 200 साल पुरानी बातें 27 जनवरी को मिर्ज़ा ग़ालिब की जयंती पर बताई गई, मौका था 27 दिसंबर 2025 को गालिब की 228वीं जयंती। वह पेंशन के लिए भाग दौड़ कर रहे थे और दिल्ली से कोलकाता जाया करते थे। 1827 ईस्वी में ग़ालिब बान्दा आए थे जब उनके पास पैसा खत्म हो गया था और गम्भीर रुप से बीमार थे।

अमर उजाला 29 दिसंबर 2025

<u>माल्कम हेली, गर्वनर, उत्तर प्रदेश</u>

सन 1929 ईस्वी में सर माल्कम हेली, गर्वनर, उत्तर प्रदेश दौरे पर बान्दा आए तो मुसलमान जमीदारों का एक प्रतिनिधिमंडल नें उनसे मुलाकात की। इसी प्रतिनिधिमंडल से गवर्नर साहब ने इच्छा जाहिर की कि वह बान्दा की ऐतिहासिक इमारतें और यहां के खास दृश्य देखना चाहते हैं। सैयद <u>हसन जहीर</u>, जिनके नाम पर जहीर क्लब बना, आईसीएस, कलेक्टर, बान्दा थे। उन्होंने उत्तरी मीनार और उसकी छत से बान्दा शहर का दृश्य दिखाया, फिर मीनार के सबसे ऊपरी भाग में जाकर वहां एक घण्टा बिताया। अक्टूबर महीने का हल्का सर्द मौसम था, शहर के चारों तरफ पानी के तालाब भरे थे, केन में भी खूब अच्छा पानी था। बामेश्वर पहाड़ पर हरे भरे वृक्ष दिखाई दे रहे थे, बरसात के तुरन्त बाद का मौसम होने से लगभग सभी इमारतें धुल चुकी थे और धूप में चमक रही थी। गवर्नर साहब ने शहर की एक एक इमारत के बारे में पूछा। मीनार से उतरने के बाद उन्होंने पांच दरों(दरवाजों) का मुआयना किया और मिस्टर हसन जहीर जिलाधिकारी से कहा कि आप लोगों ने मुझे बान्दा जैसा एक स्थान दिखाया जो मुझे अच्छी तरह से याद रहेगा।

(इतिहास) नॉर्वेजियन इंग्लिश कब्रिस्तान
<u>नॉर्वेजियन–इंग्लिश कब्रिस्तान</u>

पिछले 200 सालों से बान्दा में अंग्रेज़ों की आत्माएँ शांति से यहाँ विश्राम कर रही हैं। बान्दा के कालूकुवां–फ्लाईओवर रोड पर स्थित यह कब्रिस्तान भारत पर ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजी गौरव के इतिहास को समेटे हुए है। यह लगभग दो शताब्दियों से बान्दा और उसके भूतपूर्व और वर्तमान निवासियों के जीवन और उस अवधि के दौरान घटित सभी घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी है। चाहे वह 1857 ई0 का विद्रोह हो या नवाब बान्दा का स्वर्णिम काल या फिर भारत का स्वतन्त्रता सन्ग्राम, वे सभी यादें आज भी इस ज़मीन के टुकड़े पर संजोए हुए हैं जो इतना स्थिर और कमतर महसूस होता है। लेकिन यह सब कम से कम भारत जैसे देश में इसके महत्व को कम नहीं कर सकता जहाँ कब्रों का मतलब पवित्र होता है।

सन्भ्रान्तो का भ्रमण Elite Visit

सन्भ्रान्तो का भ्रमण Elite Visit